भगवत् कृपा

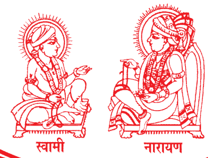

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 24 अंक : 10 | शुक्रवार, 26-10-2001 | वार्षिक चंदा : 50-00

भगवान श्री स्वामिनारायण की बेमिसाल विशेषताएँ...

*[अहोहो ! उत्सवों और मंगल पर्वों का आगमन दरवाज़े पर दस्तक दे रहा है... सर्वप्रथम आज है **दशहरा** यानि–आसुरी संपत्ति पर दैवी संपत्ति की विजय का दिन व प्र.ब्र.स्व. प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का पार्षदी दीक्षा दिन... तत्पश्चात् **शरद्पूर्णिमा–1 नवम्बर** यानि–मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का प्रागट्य दिन व प्र.ब्र.स्व. प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन ! और फिर...**14 नवम्बर** यानि–जगमगाती **दीवाली** व **15 नवम्बर** यानि–**नया वर्ष**-अन्नकूट और तत्पश्चात् **18 नवम्बर** यानि–**प.पू. पप्पाजी आराधना पर्व !***

*और...**'स्वामिनारायण महामंत्र द्विशताब्दी'** के साथ-साथ ही **'गुरुहरि प.पू. काकाजी महाराज साक्षात्कार दिन स्वर्णजयंती'** भी आहट दे रही है। हम सब कितने सौभाग्यशाली हैं कि हमारे जीवनकाल दौरान ही भक्ति अदा करने के ये सुनहरे अवसर आ रहे हैं।*

*पुराने जोगियों ने प.पू. काकाजी की परावाणी में कई बार सुना है–**'सर्वोपरि स्वामिनारायण'**। अर्थात् वे यह कहना चाहते थे कि–**'तुम किसी व्यक्ति, शक्ति, पदार्थ, प्रसंग, देश, काल, क्रिया आदि को देख कर क्यों प्रीकंडीशन्ड माईन्ड से मूल्यांकन करने लगते हो ? क्यों नए प्रारब्ध खड़े करते हो ? क्यों दुःखी, उदास या व्यथित हो जाते हो ? ऐसा क्यों नहीं मानते कि सर्व कर्ता-हर्ता, प्रेरक, नियंता मुझे मिले मेरे प्रभु ही हैं ? हर एक पर कन्ट्रोल तो वो सर्वोपरि भगवान की सत्ता का है।' वे बार-बार कहते कि अन्य सभी आधार छोड़ कर सर्वोपरि प्रभु की सत्ता का दिल की सच्चाई से स्वीकार करके भजन का ही एकमात्र आधार लो।** स्वयं उन्हें भी निरंतर भजन करते हम सब में से अनेकों ने देखा है। प्रगट प्रभु के साथ ऐक्य साध कर तल्लीन होकर जपनाद करते हुए उनके दर्शन करना भी जीवन का एक अनमोल मौका था।*

*भजन करने की उन्हें कोई जरुरत ही नहीं थी; वे तो गुरुहरि योगीजी महाराज के पसंदीदा पात्र-श्रीजी के अखंड धारक थे। उन्होंने वह हमारे लिए किया ! तो, आइए स्वामिनारायण महामंत्र द्विशताब्दी एवं प.पू. काकाजी के साक्षात्कार की स्वर्णजयंती के मंगलकारी अवसर पर प.पू. काकाजी द्वारा बोले गए मार्मिक व रहस्यपूर्ण शब्द–**'सर्वोपरि स्वामिनारायण'** को विविध पहलुओं द्वारा समझें और हमारे जीवन की धन्यता का एहसास करें ।]*

पशु से लेकर मानव जीवन शुरु हुआ तब से पृथ्वी पर अनेक संप्रदाय, आचार्य, अवतार, सिद्धपुरुष या पैगम्बर एवं ऐसे संत प्रगट होते रहे हैं और रहेंगे ही। बदलते युग के साथ-साथ उन्होंने नए युगधर्म प्रवर्ता कर एकांतिक धर्म की समझ भी दी; परंतु, **जीव को सरलता से ब्रह्मरुप करके जीतेजी** परमतत्त्व का-परमपद का या ब्रह्ममहोल-अक्षरधाम की प्राप्ति का आनंद और सुख सभी को मिले ऐसा सुगम, संपूर्ण, सरल व सर्वजीवहितावह एवं देश, काल, क्रिया, स्थान, गुण, शक्ति, जाति आदि **सभी भेदों से पर** ऐसा जो **सनातन-सर्वोत्तम परम कल्याण का मार्ग भगवान स्वामिनारायण ने खुल्ला किया यही उनके सर्वावतार के अवतारी होने का प्रमाण है।**

कई कहते हैं कि ये तो अपनी डींगे मारते रहते हैं कि 'स्वामिनारायण' सर्वोपरि हैं, पर उसके कई कारण हैं जिससे कि निष्ठा वाले भक्तों के मुँह से अपनी यह अनुभूति-अपना

यह विश्वास अनायास ही निकल जाता है या वे दावे से एकदम यूं बोल देते हैं।

सो, हम इसे किसी अन्य धर्म की न्यूनता या किसी पर कटाक्ष या निंदा या तुलना की अपेक्षा अपनी विशेषता जताने की भावना ना समझें, बल्कि ऐसे ठोस सबूत होने के कारण इन बातों का स्वीकार करें।

(१) भगवान स्वामिनारायण ने धरातल पर पुण्यभूमि भारत में अवतार लेकर प्रभु की शाश्वत् छत्रछाया अर्पण करके मानवजाति को सदैव के लिए सनाथ बनाया।

''जब तक पृथ्वी का तल रहेगा तब तक 'यावच्चन्द्र दिवाकरौ' मैं मेरे निर्मल व गुणातीतभाव को पाए संतों द्वारा पृथ्वी पर अखंड प्रगट रहूँगा''–
यह आशीर्वचन देकर इन्होंने करुणा बरसा दी ! सच्चे शाश्वत् सुख का रास्ता सदा के लिए खुल्ला कर दिया... अनादि अक्षरधाम के व्यक्तिस्वरुप मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी को साथ लाए और उनके माध्यम से पुरूषोत्तमनारायण के असली स्वरुप और ख़मीर के ज्योतिर्धरों की संतप्रणालिका पृथ्वी पर अखंडित ज़ारी रखी। यूं **अक्षुण्णरुप में दीपक से दीपक सदैव जलता रखा, वही स्वामिनारायण की सर्वोपरिता की एक बेजोड़ मिसाल है। प.पू. काकाजी के शब्दों में– इनकी हाईरारकी-परंपरा कॉन्स्टन्ट एन्ड कॉन्टीन्यूअस रही। जो दीप से दीप जला कर जाए वो सर्वोच्च विभूति।** वो भगवान स्वामिनारायण ने किया !

एक मिस्टिरियस गति से महाराज धरातल पर अखंड रहे हैं। जीवंत प्रगट विभूति में रह कर अवतार कार्य आगे बढ़ा रहे हैं। **यह एक आश्चर्य है, फिर भी एक हकीकत है !** और... इसी कारण **'प्रगट की उपासना'** को भगवान स्वामिनारायण के सत्संग की विशिष्टता मानी गई है। स्वयं के पुरूषोत्तमरुप का या पूर्णता का दर्शन उन्हें कितना अधिक स्पष्ट और मूर्तिमान होगा कि पात्र पसंद करके सच्ची और संपूर्ण आध्यात्मिक गरिमा वे दे सके होंगे ना ?

अपने जीवनकाल दौरान जिन्होंने एक आध्यात्मिक एवं सच्ची प्रभुभक्ति का माहौल प्रगटाया हो उन्हें हम अलौकिक विभूतियाँ मान लें या उनसे प्रभावित हो कर उन्हें अवतारपुरुष भी भले ही गिन लें, पर–इनके गत होने पर वह आध्यात्मिक चेतना का स्रोत सूखने लगता है या चालू रहता है वह सोचना जरुरी है।

आज अनेक संप्रदाय हैं, कई कितने धर्म हैं–लेकिन ऐसी विभूति के अंतर्धान होने के बाद वह ज्योति जलती ही रही हो ऐसा नहीं हुआ... अपने जैसा ही नूर रखा हुआ वारिसदार छोड़ा नहीं दिखाई पड़ता। विविध कक्षा के अवतार पुरुष पृथ्वी पर आए, लेकिन जैसे दीपक बुझने के बाद अंधेरा छा जाता है, वैसे उनकी आध्यात्मिक या ईश्वरीय विरासत उन सभी के पीछे अखंड नहीं रही। इनके **स्थूलरुप से रहने तक एक अद्‌भुत चेतनता जरुर प्रगटी, लेकिन उनके जाने के बाद वे संप्रदाय, वे मठ या आश्रमों में मानो आध्यात्मिकता ना रही हो–सूने हो गए ऐसा इतिहास और लोकानुभव में हमेशा आया है।**

श्री रामचन्द्रजी कहो, जीसस कहो, श्री कृष्ण कहो या सिक्ख संप्रदाय भी... सिक्ख संप्रदाय को भी आखिर यह कहना पड़ा कि अब **ग्रंथ साहेब** में से अमृत पिया करना ! **पर, ग्रंथ साहेब में से भी हम अपने आप नहीं ले पाएंगे...** प्रगट सद्‌गुरु होने जरुरी ही नहीं, बल्कि अनिवार्य हैं। शास्त्रों का ज्ञान समुद्र के पानी के समान बताया है। समुद्र में पानी खूब है, अगाध है। पर, वह पानी सीधा पी ही नहीं पाएंगे... पीने में खारा लगेगा। इतना ही नहीं–उल्टी हो जाएगी। इसी तरह **शास्त्रों से ज्ञान भी हम अगर अपने आप लेने जाएंगे, तो पचा नहीं पाएंगे।** जबकि समुद्र का पानी सूर्य की गर्मी से भाप बन कर फिर बादल द्वारा बारिश के रुप में नीचे आए तब पिया जाता है। इसी तरह वही शास्त्र का ज्ञान ऐसे संत से हमें मिले, वही ज्ञान हमारी भीतर जम सकता है, हमें तसल्ली दे सकता है, हमारी आत्मा की भूख मिटा सकता है।

यूं भगवान स्वामिनारायण ने यह एक अद्‌भुत काम करा कि इन्होंने अपने जैसी ही विभूतियों की-संतों की **अक्षुण्ण परंपरा** धरती पर रख दी... वही **उनकी सर्वोपरिता की उत्कृष्ट एवं जीवंत निशानी है; जो कि–अन्य किसी जगह पर नहीं मिलेगी। अन्य जगहों पर उत्तराधिकारी नॉमीनेट करना पड़ता है-चुनना पड़ता है। गुणातीत परंपरा में उत्तराधिकारी ना चुनना पड़ता है, ना ही नॉमीनेट करना पड़ता** है कि अब यह मेरा उत्तराधिकारी रहेगा। प्रगट का स्थान किसी का दिया, लिया नहीं जाता। वह तो अपने आप सिद्ध होता है। सो ही वे पूजे जाते हैं। शाम को सूर्य ढल जाता है और दूसरी सुबह जब उगता है, तब उसके तेज, उसके प्रकाश, उसकी गर्मी, उसकी ऊर्जा से अपने आप ही सभी को पता चलता है कि यह वो सूर्य उगा है। पूर्णत्व की पहचान और कोई क्या करा पाएगा ? वह तो अपने आप ही असंदिग्धरुप से हो जाती है ! वैसे ही भगवान स्वामिनारायण के बाद उनके जैसे ही ऐश्वर्य, सामर्थ्य, पूर्णता को पाए हुए मूलअक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी हुए, उनके बाद अनादि महामुक्त भगतजी महाराज, जागास्वामी, श्री कृष्णजी अदा हुए, गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज, ब्रह्मस्वरुप योगीजी महाराज हुए, उनके बाद गुरुहरि प.पू. काकाजी महाराज–जिन्हें हमने देखा और प.पू.पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, विश्ववंदनीय प्रगट

ब्रह्मस्वरुप प.पू. प्रमुखस्वामी महाराज, प.पू. महंतस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब एवं प.पू. दिनकरभाई विराजमान हैं। **स्वामिनारायण भगवान की यह एक अनपेरेलल-बेमिसाल देन है, जो और कोई जगह नहीं है।**

पाँच हज़ार साल पहले पुराण पुरुष श्री कृष्ण परमात्मा आए। उन्होंने अर्जुन को एक विराट दर्शन भी कराया। उसके दिल में एक ठण्डक भी प्रदान करी। उसके जीवनरथ के सारथी भी बने। उसे स्पष्ट विश्वास के साथ एहसास भी कराया कि– 'अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।' अर्जुन निःसंशय भी हो गया और उसे उस के ढंग से कल्याण की प्रतीति हुई भी जरुर। गाँव की अनपढ़ गोपियों को भी लगाव करवा कर मोक्ष की प्रतीति कराई। लेकिन श्री कृष्ण के अंतर्धान होने के बाद शुकजी जैसे, महाप्रभु वल्लभाचार्यजी जैसे, चैतन्य महाप्रभु जैसे कोई विरले ही श्री कृष्ण के भाव को पाकर आश्रितों को मोक्ष की प्रतीति करा पाए।

यूं श्रेष्ठ विभूतियाँ, संतों और आचार्यों ने संप्रदाय, आश्रमों, मठों या मंदिरों की स्थापना करी, लेकिन उनके अंतर्धान होने के बाद वहां प्रभुता हमेशा सतत् प्रगट नहीं रही। जगद्गुरु आदि शंकराचार्यजी, स्वामी रामतीर्थ, श्री रामकृष्ण परमहंसदेव, श्री रामदासस्वामी या महर्षि अरविन्द-सभी जगहों पर **मूल प्रतिभाशाली पुरुष के अंतर्धान होने के बाद ऐसी की ऐसी आध्यात्मिक चेतना सर्वांगी कक्षा पर समग्रतया ज़ारी नहीं रह पाई।** जबकि **स्वामिनारायण भगवान ने वैसी की वैसी ही चेतना अखंड प्रगट रखी है और उनके सच्चे संत द्वारा प्रभु का सुख सभी को दिया है–मनवाया है। यही उनकी एक अवतारी पुरुष–पूर्णावतार के रुप की एक निजी विलक्षणता है और सर्वोपरिता है। पूर्ण अवतार के पृथ्वी पर पधारने की यह एक निशानी है। पूर्णत्व में से पूर्णत्व प्रगट होता ही रहा है-होता ही रहेगा !**

(२) अब तक के अवतार पुरुषों ने आश्रितों के योग और क्षेम की जिम्मेदारी ली, लेकिन **भगवान स्वामिनारायण ने जैसी और जितनी जिम्मेदारी ली है, उसका जगत के कोई भी सांप्रदायिक या आध्यात्मिक इतिहास में मुकाबला नहीं है।**
श्री कृष्ण ने गीता में विश्वासपूर्वक वचन दिया कि– मेरे भक्त का नाश नहीं होगा।
ईसु ख्रिस्त ने कहा कि– तुम्हारी फिक्र-चिंताएं मुझ पर छोड़ दो, मैं उठा लूँगा।
पर, भगवान स्वामिनारायण की करुणा की तो कोई सीमा ही नहीं। **तुम दुःखी नहीं होओगे यह वरदान तो कई अवतारों ने दिए, लेकिन स्वामिनारायण की सर्वोपरिता क्या ?** उन्होंने कहा कि– **तुम्हारे दुःखों में मेरी साझेदारी रहेगी। ऐसा मैत्रीपूर्ण संबंध उनकी सर्वोपरिता का एक और प्रमाण है।**

इन्हें गद्दी पर बिठाया तब इन्होंने गुरु रामानंदस्वामी के पास अपना दिल नीचो कर वरदान माँग लिया कि–
'आपके सत्संगी को एक बिच्छु के डंक का दुःख होने वाला हो तो मेरे रोम-रोम में कोटि बिच्छु का दुःख हो, लेकिन आपके सत्संगी को वह न हो और आपके सत्संगी के प्रारब्ध में भीख माँगना लिखा हो तो रामपत्तर मुझे देना, लेकिन आपके सत्संगी अन्न-वस्त्र से दुःखी न हों–ये दो वरदान मुझे दे दो।'

छोटे-बड़े किसी भी संकट में पड़े अपने आश्रित को वे कभी नहीं भूलेंगे ऐसी हमेशा की गारंटी इन शब्दों से श्रीजी महाराज ने उनके आश्रितों को दे दी।

भगवान भक्तों के रखवाले हैं, दुःखों को दूर करने वाले हैं–ऐसा सभी संप्रदायों में कहा जाता है। लेकिन श्रीजी महाराज सबसे पहले ऐसे अवतारी पुरुष निकले कि जिन्होंने भक्तों के दुःख में ऐसी अद्वितीय साझेदारी सामने से माँग ली ! मुनाफे में नहीं, घाटे में ! यह उनकी भावना मात्र नहीं है, प्रार्थना थी ! हर कष्ट को हटा देने वे समर्थ थे; फिर भी कष्ट मांगा है ! **यह था अपने आश्रितों के प्रति उनका अत्यधिक लगाव !** श्रीजी महाराज ने तो यहां तक भी कह दिया कि सात अकाल भले पड़े, लेकिन **पंच प्रण सहित मेरा आश्रय करने वाले भक्त अन्न या वस्त्र के बिना नहीं रहेंगे–विधाता के लेख भी मेरे आश्रित को आंच नहीं दे पाएंगे ! उसे यदि प्रारब्ध का दुःख भोगना भी होगा, तो सूली का दुःख शूल की थोड़ी सी वेदना में टाल दूँगा... ऐसे प्रभु कितने सर्वोपरि !** जगत में तो कहा जाता है– प्रारब्ध को कोई टाल नहीं सकता और प्राण व प्रकृति साथ ही जाते हैं। **मन, बुद्धि, वाणी और कल्पना की सीमाओं से परे की भगवान स्वामिनारायण की यह आशिष है। प.पू. काकाजी श्रीजी के अखंड धारक........ वे कई बार कहते– तुम्हारा सुख तुम्हें मुबारक हो, तुम्हारे दुःख मुझे दे दो।**

(३) श्रीजी महाराज ने यह भरोसा भी दिया कि **मेरे प्रगट संत को पहचान कर आसरा करने वाले हरिभक्त पर ग्रह-पनौती, भूत-प्रेत, क्षुद्र एवं मलिन देवी-देवता, मंत्र- तंत्र, शगुन-अपशगुन या उससे भी अधिक–काल, कर्म और माया का प्रभाव हावी नहीं होगा !** कठिन से कठिन तपस्या से भी जो शक्य न हो ऐसी काल, कर्म और माया के बंधन से मुक्ति सिर्फ आसरे में ही बख़्शिश देने वाला एवं **प्रारब्ध और प्रकृति के बंधन से छुड़वा कर विधाता के लेख पर हमेशा के लिए शेरा लगा देने वाला ऐसा संपूर्ण स्वरुप जगत ने कभी देखा नहीं है।**

(४) अपने आश्रित सत्संगी को स्वामिनारायण ने यह भी वरदान दिया कि अंतकाल में देह छोड़ते समय उनके आश्रितों को यम या यम के दूत नहीं, बल्कि वे स्वयं लेने आयेंगे। यह कैसा अद्भुत कि आश्रितजन को अंतकाल में भगवान या संत

दिव्य दर्शन देकर चैतन्य में शेष रह गई वासनाओं यानि कि वृत्तियों से मुक्त करके अपनी दिव्य मूर्ति में खींच कर जीव को अक्षरधाम में ले जाएंगे। यूं **महाराज ने इस एक ही वरदान में अपने आश्रितों की चौरासी योनि उड़ा दी** !

और...

यह बात ऐसी भी नहीं कि इन्होंने सिर्फ यूं कहा ही है। स्वामिनारायण के कई आश्रित आज भी जब शरीर छोड़ते हैं, तो कहते है कि महाराज लेने आए हैं, जिसका कईयों को दर्शन भी हुआ है ! इस बारे महाराज ने कोई फर्क भी नहीं रखा। वर्ना स्वामिनारायण संप्रदाय आज तो काफी-कई अलग-अलग गुटों-संस्थाओं में बंटा हुआ है; लेकिन महाराज ने ऐसा कुछ नहीं रखा कि मूल संस्था के हों–बोचासण वाले हों, उन्हें ही वे लेने आएंगे या जो प.पू. काकाजी के साथ जुड़े हैं इनको ही वे लेने आयेंगे या जो मुक्तजीवनबापा के आश्रित हों इनको ही लेने आयेंगे। हम कहीं से भी-किसी द्वारा भी जुड़े होंगे, हमें महाराज लेने आएँगे । बच्चे भले अलग-अलग हो गए हों, पर सभी का पिता तो एक ही है ! **यह वरदान और किसी जगह पर नहीं है। कहीं सुना है क्या कि कोई देवी-देवता अंतकाल पर यूं लेने आए हों ?** मक्खन में से बाल को जिस आसानी से खींच लिया जा सकता है, वैसे भगवान स्वामिनारायण हमारी देह में से जीवात्मा को खींच कर अपने धाम में ले जाते हैं और... प्रतीति कराते हैं कि हमें अब आवागमन के चक्कर नहीं रहे हैं। कईयों ने यह देखा भी-सुना भी हुआ है कि महाराज व संत लेने आए हुए हैं ! **यह अजोड़ वरदान देकर श्रीजी महाराज ने अपने सभी आश्रितों को निर्भय कर दिया और साथ ही अपने सर्वोपरि स्वरुप का अद्‌भुत परिचय कराया है।**

(५) श्रीजी महाराज को आध्यात्मिक साधना की एक नई क्षितिज खोलनी थी, क्योंकि वर्षों से चल रही चीलाचालू ज्ञानभक्ति को एक नई दिशा की ओर अग्रसर करना था। सो–उन्होंने **समाधि प्रकरण** चला कर ऐश्वर्यों की नई परंपरा सर्जी।

लोगों में भय बढ़ा कर स्वयं के आश्रितों की संख्या बढ़ाने के लिए श्रीजी महाराज ने यह ऐश्वर्य-सामर्थ्य इस्तेमाल नहीं किया, परंतु आश्रितों की निष्ठा दृढ़ बने ऐसा उन्होंने जरुर किया है। उनके चमत्कार तो भक्तों की श्रद्धा का बल और निश्चय की दृढ़ता बढ़ाते रहे। भक्तजनों का उद्धार करने की एकमात्र भावना !

जिस समाधि के लिए योगीओं ने सेंकड़ों वर्षो की साधना करी, वह समाधि श्रीजी महाराज ने कोई एकल-दुकल को नहीं, पर अनेक जीवों को सहज रुप से कराई ! अष्टांगयोग की समाधि करनी या करानी कितनी अधिक दुष्कर है, वह तो इस मार्ग में जिसने साधना करी होगी उसे ही पता चलेगा। बालक हो या वृद्ध, स्त्री हो या पुरुष हो, पापी हो या पुण्यशाली, हिन्दू हो या मुसलमान– चाहे कोई भी हो, अनेकों को श्रीजी महाराज ने संकल्पमात्र से यह दुर्लभ समाधि सहज कराई।

इस समाधि प्रकरण की विशेषता यह थी कि–

श्रीजी महाराज के दर्शन से, आवाज़ से, नामस्मरण से

व

उनकी छड़ी के स्पर्श से

एवं

उनकी खड़ाऊ की आवाज़ तक सुनने से समाधि हो जाती। उनमें से कई तो कई दिनों या महिनों तक समाधि में रहते और काष्ठवत् हुई इनकी देह का ढेर लगाया जाता !

समाधि में उन्हें अपने इष्टदेव के दर्शन होते और वे इष्टदेव महाराज की मूर्ति में लीन होते भी दिखाई पड़ते।

प.पू. काकाजी के शब्दों में–

कालीदास के 'मेघदूत' जैसी यह कोई काल्पनिक कथा नहीं है; सिर्फ 220 साल पूर्व का यह इतिहास है।

इस प्रकार का समाधि दर्शन पहले के किसी अवतार ने नहीं दर्शाया। यह अलौकिक समाधि प्रकरण भी श्रीजी महाराज की सर्वोपरिता को साबित करता है।

(६) प्रारंभ में धर्माचार्यों ने केवल ज्ञानमार्ग प्रवर्ताया। पर वह लोकभोग्य नहीं रहा, अर्थात्–आम जनसमाज उसका लाभ नहीं उठा पाया। वह ज्ञान केवल विद्वानों-पंडितों या थोड़े मुमुक्षुओं में ही सीमित रहा। तब सारे समाज को प्रभु सन्मुख करने कृष्ण भक्ति के आद्य प्रवर्तक महाप्रभु वल्लभाचार्यजी ने भक्तिमार्ग यानि कीर्तन भक्ति-प्रेमलक्षणा भक्ति का प्रारंभ किया, पर वहां फिर ज्ञानमार्ग गौण ही नहीं-लुप्त ही हो गया ! लेकिन **श्रीजी महाराज ने धर्म, ज्ञान, वैराग्य और भक्ति के चर्तुव्यूह से उठाव लेकर सभी को भक्ति की ओर अग्रसर किया। उनकी निगाह अपने अनुयायीओं की संख्या बढ़ाने की ओर कभी नहीं रही, लेकिन ऐसे दृढ़ निष्ठावान आश्रितों की ही उन्हें कदर थी।** यह दृष्टि जगत में और किसी ने रखी है क्या ? **प.पू. काकाजी** इसी बात को अलग शब्दों में **दोहराते थे कि हमें कुंभ मेले इकट्ठे नहीं करने हैं।** फलस्वरुप भगवान स्वामिनारायण के सत्संग ने व्यक्तिधर्म से ऊपर उठ कर पारिवारिक धर्म का स्वरुप लिया। इतना ही नहीं, **सत्संग स्वतः ही एक दिव्य परिवार-सा बन गया और सत्संग के सदस्यों में एक कौटुंबिक आत्मीयता प्रगटी !**

(७) समाज तो सड़े हुए भेजे और टूटे हुए दिलों से भरा हुआ है। ज़हरभरे रोगों में फंसे हुए संसार के-समाज के और

मानव दिमाग के ज़हर का निदान करना एक बात है और उसका इलाज करके उसे हमेशा के लिए निरोगी बनाना यह दूसरी बात है। **मानव समाज के उस ज़हर को मिटाने श्रीजी महाराज ने ना कोई नारे लगाए, ना रॅलियाँ निकाली, ना ही कोई उग्र आंदोलन या प्रतिकारात्मक आक्रमण चलाए; बल्कि समाज को ख्याल भी ना पड़े यूं प्रेम से उसका ज़हर चूस लिया।**

सच्चाई को हर युग में विरोध का सामना करना पड़ा है। एक ओर अज्ञानी समाज ने महाप्रभु स्वामिनारायण और संत- सत्संगियों का भयंकर विरोध किया। दूसरी ओर भगवान स्वामिनारायण ने अपने संतों को स्पष्ट आज्ञा करी थी कि चाहे कितना ही विरोध हो, मारपीट हो तब भी सह लेना। इतना ही नहीं, बल्कि विरोधियों का भला कैसे हो उसके लिए भजन करना। ऐसी कसनी में से गुजार कर श्रीजी महाराज ने समाज को सच्चे संतों की बख़्शिश दी। सहनशीलता व प्रेम की ताकत से समाज को संतों की साधुता का परिचय करवाया !

काठी-कोली वर्ग के अनुयायीओं तक को भी उन्होंने आक्रमक प्रतिकार में नहीं जाने दिया। जड़ जैसे काठी-कोली दरबारों के समाज को उन्होंने अपने प्रेम से सहिष्णु बनाया और **उनके जीवन में हर प्रकार से रसबस होकर उन्हें चेतनवंत बनाया। उनकी जड़ प्रकृति का जड़ से परिवर्तन करके भक्ति की राह पर अग्रसर करके प्रभु सन्मुख किया।**

पहली बार जब वे अपने संघ के साथ 'आणंद' गए, तो आणंद का तत्कालीन समाज इनका स्वीकार नहीं कर पाया। सो, विरोध जताते कुछ लोग बहुत कटु वचन बोलने लगे। काठी दरबारों ने तो तुरंत अपनी तलवारें निकालीं। पर, महाराज ने उन्हें ईशारे से मना कर दिया। सो, सशस्त्र काठी-दरबारों ने 'आणंद' की भरी बाजार में वह सब कुछ मूक होकर शांतचित्त से सह लिया ! महाराज 'माणकी' घोड़ी पर विराजमान थे। उनकी पाघ के तोरे को छूता हुआ एक पत्थर निकल गया। उनके अंगरक्षक भगुजी से यह सहा नहीं गया। सो, वह अपनी कमर पर लटकती तलवार म्यान से बाहर निकालने लगा। महाराज तुरंत ही बोल उठे–'भगुजी, तलवार नहीं निकालना। यहां से ही शोभायात्रा को हम वापिस ले लें।' शोभायात्रा वापिस ली और... 'आणंद' व 'करमसद' के बीच सभा करके महाराज ने कहा–'आज तो भारी डंका बज गया, विजय हो गई।' तमतमा उठे काठी दरबार बीच में ही बोल पड़े–'महाराज ! विजय कहाँ हुई ? आपने हमें रोक लिया, वर्ना तो आज कई कितनों को सुला देते।' श्रीजी महाराज बोले– 'पाँच-पचास उनके जरुर मरते, पर पाँच-दस हमारे भी घायल होते। और... फिलहाल भीतर में जो ठण्डक महसूस कर रहे हो, वो शांति अंतर में नहीं रहती। अब देखना–सारा चरोत्तर सत्संगी हो जाएगा।' महाराज की क्षमावृत्ति, धैर्य और नम्रता भरे व्यवहार से बाद में कई कितनों को खूब गुण आया। कईयों ने कंठी पहनी !

यूं **भगवान स्वामिनारायण ने असूरों का नाश ना करके उनका आसुरीभाव टाला और उन्हें अपने करीब किया और सत्संगी भी बनाया ! श्रीजी महाराज की यह निजी और सर्वोपरि विशेषता है।**

वाकई, भगवान स्वामिनारायण ऐसे पहले अवतार हैं जिन्होंने बिना कोई शस्त्र उठाए संबंध में आये के अंतःकरण को बदला... जोबनपगी जैसे खुंखार डाकू-लुटेरों के हाथ में माला पकड़वाई ! 'गामडी' गांव की एक बुझुर्ग औरत ने सुना था कि भगवान स्वामिनारायण गधे की गाय बनाते हैं। पर, इस कथन का तात्पर्य वह समझ नहीं पाती थी। संजोगवश जोबनपगी उस बुढ़िया को अचानक मिला। बुढ़िया ने उसे सहज ही पूछा कि– ये स्वामिनारायण भगवान गधे की गाय कैसे बनाते होंगे ? जोबनपगी ने मूछों पर ताव देते हुए हंस कर जवाब दिया कि–'माँजी ! भगवान स्वामिनारायण ने जिस गधे को गाय बनाया है, आप उसी से बात कर रही हो। मेरा नाम जोबन-वड़ताला। 'स्वामिनारायण' यदि ना मिले होते, तो इतना पूछते ही आज तू परलोक सिधार गई होती। मुझ जैसे लुटेरे डाकू के हाथ में माला पकड़वा कर एक साधु की भाँति जीवन जीता कर दें-वह तो एक महाप्रभु स्वामिनारायण और उनके निर्मल साधु ही कर सकते हैं।

यूं श्रीजी महाराज ने मन के अशुद्ध भावों को बदला, छोटे-बड़े कर्म बदले, जीव के स्वभाव को बदला और **प्रकृति के परिवर्तन का यह कार्य अखंड चलता रहे उसकी व्यवस्था भी ऐसी कर दी कि उसमें कोई खोट ना रहे।** वह क्या ? तो– ब्रह्मस्वरुप संतों की परंपरा अखंडित रखी। और... **इस हेतु ऐसे संत के प्रति अखंड सद्भाव रख कर अनन्यभाव से दृढ़ आसरा कर लेने के सिवा इन्होंने हम से कोई अपेक्षा नहीं रखी है।**

(८) **अब तक के अवतारी पुरुषों ने भिन्न-भिन्न तरीके की कोई न कोई साधन प्रणालिका रखी। साधन मात्र का अंत लाए श्रीजी महाराज ! केवल अनन्य आसरे में उन्होंने सभी को कल्याण का वचन दिया।** सभी के साथ सभी की रीति से वे रसबस हुए। काठीयों को सच्चे सत्संगी बनाने के लिए उन्होंने उनकी पोषाक और रीति-रिवाज भी अपनाए और सभी को अपनापन देकर खूब सखाभाव से वे वर्ते ! तभी तो बापू एभलखाचर उनके सामने खुले हो पाए कि–'महाराज ! भले ही आप भगवान कहलाते हो और अंतिम जन्म कराने का

वचन देते हो, लेकिन हम जैसे घोर पापियों का कल्याण तो कैसे होगा ?' महाराज ने पूछा–'तुमसे हमारा संबंध है और आप यदि हम पर खूब प्रसन्न हो जाओ तो दो-तीन गांव आप हमें बख़्शिश में दे दो या नहीं ?' बापू जोश में आ गए और बोले–'अरे ! मेरा सारा देश आपके चरणों में रख देता हूँ।' श्रीजी महाराज प्रत्युत्तर में बोले–'तो फिर, हम अक्षरधाम के अधिपति पुरुषोत्तमनारायण हैं; सो जिस पर हम प्रसन्न हो जाएं उसे अक्षरधाम बख़्शिश दे देते हैं। **हम हमारे बलबूते पर मोक्ष करते हैं। आप साधन करो या ना करो, मैं मेरे बल से तुम्हें अक्षरधाम में ले जाऊँगा।' यूं सामान्य ऐसे पाँच नियम-पालन में ही, बिना साधन के मोक्ष की प्रतीति करवा देने वाले प्रभु को हम पूर्णावतार के अलावा और क्या कहें ?**

बिना साधन के एकमात्र आसरे से आत्यंतिक कल्याण बख़्शिश देने की बात श्रीजी महाराज की सर्वोपरिता सिद्ध करती है।

पर, जो-जो–

इनके संतों या सत्संगीओं के संबंध में आए हों,

उन्हें जलपान कराए, भोजन दे–

उन सभी के भी कल्याण की जो गारंटी उन्होंने ली, इसे कल्याण का कौन-सा मार्ग कहा जाए ? ऐसे संबंध योग को तो 'लिफ्ट' ही माननी पड़े ! सरल, शीघ्र और निश्चित् ! ऐसी अतिउदार भावना किसी और अवतार ने नहीं रखी।

(९) सद्. रामानंदस्वामी के अंर्तधान होने के बाद भगवान स्वामिनारायण ने जीवंत एवं खुला **'स्वामिनारायण' महामंत्र** दिया। सद्. रामानंदस्वामी का सारा अनुयायीगण 'श्री कृष्ण' का भजन करता था। श्रीजी महाराज की यह एक ही आज्ञा से बिना कोई तर्क-वितर्क करे वे सब के सब निःसंशयरुप से 'स्वामिनारायण' मंत्र रटने लगे। यह कोई सामान्य बात नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक इतिहास में घटी अपूर्व घटना है। **पहले के किसी अवतार ने यूं अपने ही 'नाम' से भजन करने का स्पष्ट आदेश नहीं दिया है; ना ही अनुयायीओं ने भी अपना गुरुमंत्र छोड़ कर यूं नया मंत्र शिरोमान्य किया है।** यह घटना ही उनकी सर्वोपरिता सिद्ध कर देती है।

इससे भी अधिक–कान में मंत्र फूँकने की एक प्रथा-रिवाज है। पर, भगवान स्वामिनारायण ने सभी के लिए इसे खुला रख कर अत्यधिक विशालता का परिचय दिया कि **जाने-अनजाने, परिचित-अपरिचित, निष्ठा वाला या केवल सद्भावना वाला भी, अरे ! आजमाने के ढंग से भी इस मंत्र को रटेगा तो उसकी पुकार प्रभु अवश्य सुनेंगे ही।**

दूसरी बात– हम राम-राम, राधे-राधे, कृष्ण-कृष्ण या स्वामिनारायण-स्वामिनारायण या कोई भी मंत्र जपेंगे, तो एक मंत्र का फल एक। पर, **वही मंत्र इष्टदेव को प्रगटाई मानवस्वरूप विभूति की स्मृति करके-उसके वचन से रटेंगे तो एक मंत्र का फल** कई करोड़ गुणा ! क्योंकि–'नाम' में 'रुप' और 'निश्चय' सम्मिलित हुए ! यह मूर्तिमान प्रगट जो है, वह भगवान का स्वरुप है–ऐसा अनन्य भाव-विश्वास यहां प्रगट होता है ! **यह एक करामात है–जो कि 'स्वामिनारायण' के यहां ही है।** यूं यह मंत्र अलादीन के चिराग के समान है। जैसे-जैसे घिसेंगे वैसे प्रभु हमारी समस्या-मुश्किल हल होती जाएगी... यानि-संत की स्मृति करके चलते-फिरते, उठते-बैठते, छोटी-बड़ी हर क्रिया करते हुए जितना मंत्रजाप किया करेंगे उतना हमें पारलौकिक अनुभवों की-आश्चर्यों की परंपरा का निरंतर दर्शन होता जाएगा।

(१०) **भगवान स्वामिनारायण ने अध्यात्मज्ञान इतनी सादी-सरल भाषा में परोसा कि गाँव के सामान्य लोग तक आसानी से समझ पाएं।** 'वचनामृत' ऐसा ही सनातन भारतीय तत्त्वज्ञान का निचोड़रुप पुस्तक है। संस्कृत भाषा में लिखे गए शास्त्रों का बारीक तत्त्वज्ञान सिर्फ विद्वद्भोग्य ही रहा है। आम समाज को जो ज्ञान समझ में ही न आया हो, उसे भला आचरण में कैसे ला पाएंगे ? वह तो सिर्फ विद्वानों की चर्चा और भाष्य का विषय बन कर ही रहा ! जबकि **स्वामिनारायण भगवान के वचनामृत की भाषा इतनी सादी व सरल है कि पढ़े-लिखे विद्वान हो या देहाती किसान–सभी को समझ आए।** यूं उनका यह ज्ञान सामान्य जन समाज के लिए भी आचरणोपयोगी बना है। तत्त्वज्ञान के कई अटपटे विषय–जिसे लिखने में ढेर पन्ने भी कम पड़ें, उन विषयों को सभी के गले उतरे यूं बिलकुल सादी भाषा में, एक-दो वाक्यों में ही प्रभु ने स्पष्ट करे हैं ! जैसे कि–'माया' का स्वरुप समझाने कई शास्त्र लिखे गए, पर भगवान स्वामिनारायण ने एक ही वाक्य में माया का स्वरुप बताया कि **भजन करते हुए बीच में जो बाधारुप बने वो 'माया'** ! जिन्हें स्पष्ट दिखाई नहीं पड़ता हो, वे धुंधला-धुंधला देख कर एक अंदाजे से ही खाली इधर-उधर का वर्णन करते रहते हैं... जबकि महाराज को एक स्पष्ट **दर्शन था, सो सरल भाषा में स्पष्ट समझा दिया। और... सभी शास्त्रों ने 'माया' को दुःखदायी बताई, जबकि भगवान स्वामिनारायण पहले निकले जिन्होंने 'माया' को सुखदायी नहीं, बल्कि परम सुखदायी कही** ! **'ज्ञान' से परे का जिसे संपूर्ण व बिलकुल स्पष्ट, सुरेख और मूर्तिमान दर्शन हो वही यह कह सकता है न ?**

सभी आध्यात्मिक ग्रंथों में '**वचनामृत**' का स्थान विशिष्ट ही रहेगा। **कोई भी धर्मसंस्थापक का उपदेश उनकी हयाती में प्रकाशित नहीं हुआ; जबकि– भगवान स्वामिनारायण के उपदेश का तत्कालीन सद्गुरुओं ने 'वचनामृत' ग्रंथ के रुप में संकलन**

करके गांव 'लोया' में उन से प्रमाणित करवाया है। विश्वधर्म के ग्रंथों में यह भी एक अनूठी घटना है !

(११) सामाजिक जीवन में व्यावहारिक शुद्धि और सांसारिक मिठास के साथ-साथ अखंड निश्चिंतता के लिए भगवान स्वामिनारायण ने सुदर्शनचक्र रुपी एक छोटा-सा ग्रंथ 'शिक्षापत्री' दिया। करीब 220 साल पहले लिखी सर्वजीवहितावह इस 'शिक्षापत्री' के नियमों के अनुसार आज के युग में यदि कोई भी जीव वर्तने लग पड़े, तो वह दुःखी नहीं होगा। निर्मल पवित्र संत को आगे रख कर 'शिक्षापत्री' के अनुसार व्यवहार करने वाले आश्रित की वे अखंड रक्षा में रहेंगे ऐसा भगवान स्वामिनारायण का वरदान है। साथ ही– **बदलते युगधर्म एवं संजोग को ध्यान में रखते हुए आचार, व्यवहार और प्रायश्चित् के इन नियमों में प्रगट सत्पुरुष की आज्ञा से बदलाव का आदेश देकर श्रीजी महाराज ने अपनी फ्लेक्सीबीलीटी एवं दूरदर्शिता का परिचय भी दिया है।**

(१२) यह भी कितना सत्य है कि समर्थ पुरुष त्रिकाल में किसी का भी खंडन नहीं करता। जो खंडन करता है, वह उसकी अपूर्णता है–दौर्बल्य है। समर्थ पुरुष दूसरों की महिमा ही गाए... स्वामिनारायण के मंदिर और शास्त्र देख कर सहज ही ख्याल आ जाए कि प्रभु का उठाव बिलकुल सर्वदेशीय है। उन्होंने मंदिरों में नरनारायण देव, लक्ष्मीनारायण देव, राधाकृष्ण देव भी स्थापित किए। गणेशजी और हनुमानजी स्थापित करके मंगलकारी भावना और पवित्रता को भी जीवंत रखा। शिक्षापत्री में भी पंचदेव को सम्मानित किया... यूं उन्होंने किसी की निंदा नहीं करी, बल्कि यही उपदेश दिया कि आदर सभी का करो। **सभी संप्रदायों के सारतत्त्वों को अपने उपदेशों में समाविष्ट करके सर्वदेशीय बातों से समाज के साथ सुसंवादित रह कर वे सभी के दिल में बस गए और सभी से 'स्वामिनारायण' का भजन करवाया !** जैन या वैष्णव, शैव या शाक्त, पारसी या मुसलमान और जड़ एवं नास्तिक सभी को श्रीजी महाराज में श्रद्धा हुई। महाराज के संतों में प्रेमलक्षणा भक्ति सम्राट सद्. प्रेमानंदस्वामी मुसलमान थे, सुरत के अरदेशर कोतवाल पारसी थे। महाराज के निजी भक्त हरजी ठक्कर खोजा मुसलमान थे। सभी के ढंग से उनसे तप, ध्यान, भक्ति, सेवा करवा कर या उन्हें ऐसी महिमा में झबो कर सभी का सरीखा विकास किया।

आध्यात्मिक इतिहास के पन्ने पर कहीं ऐसी बात नज़र नहीं आई है, पर **इसी में भगवान स्वामिनारायण की सर्वोपरिता निहित है।** प.पू. काकाजी भी तो अक्सर कहते कि राम को मानो, कृष्ण को मानो, माता को मानो, महादेव को मानो; भले ही किसी देवी-देवता को मानो, लेकिन **तुम्हारे वो इष्टदेव मानवस्वरुप में प्रगट होने चाहिए जैसे अर्जुन के सारथी 'कृष्ण' मानवस्वरुप में मौजूद थे। तभी तो– उसके कुरुक्षेत्र का अंत आया !** और **इस तरीके से स्वामिनारायण धर्म सनातन ही है जो कि प्रगट उपासना की धारणा सहित है और आज 220 साल के बाद भी जीवंत है–हरियाला है।**

(१३) श्रीजी महाराज ने स्त्री और धन के त्यागी साधुओं, सांख्ययोगी बहनें, युवकों (पार्षदों) एवं एकांतिक गृहस्थों सहित संप्रदाय का एक क्रांतिकारी ढांचा रचा। गृही और त्यागी का सुंदर समन्वय भगवान स्वामिनारायण ने किया। एक ओर **गृहस्थों को देख कर संतों के दिल में अपने आत्मीय स्वजन आए हों ऐसा अपनेपन का एहसास हो, तो दूसरी ओर संतों के दर्शन से गृहस्थों को अपने प्रभु के दर्शन की प्रतीति हो ऐसी व्यवस्था इन्होंने करी।**

संन्यासीओं के कई मठ एवं आश्रम थे; पर, वे संन्यासी जनसमाज के जीवन में ओतप्रोत नहीं हो सके। और... गृहस्थों के जीवन में यूं रसबस हुए बिना, संतों के दिए उपदेश की कोई असर उनके जीवन में हुई नहीं। कई साधु-संन्यासी गृहस्थों के जीवन में ओतप्रोत हुए भी, तो वहां वे स्वयं संसार की दलदल में फंस गए ! सो, गृहस्थों में यही भावना पनपी कि अध्यात्मज्ञान अलग चीज़ है और हमारा संसार-व्यवहार अलग बात है। यूं साधुसमाज संसारीओं से अलग ही रहा; जिससे कि साधु जीवन की निर्मलता–पवित्रता एवं प्रभुनिष्ठा का बल संसारीओं में आ न पाया। पर, यह ख्याल ही नहीं था कि ऐसे सच्चे संत को हमारे जीवन के केन्द्र में रख कर जीने से ही तो हमारा संसार अमरत्व और अमृतत्त्व को पाएगा।

भगवान स्वामिनारायण ने गांव व शहरों की बस्ती के बीचोंबीच ही शिखरबद्ध मंदिरों का निर्माण किया और उनके संतों को स्त्री एवं धन के त्याग के कड़े नियम देकर उन मंदिरों में रखा। सांख्ययोगी बहनों के मंदिर भी अलग बनवाए। कैसे विचक्षण प्रभु ? स्त्री और धन के त्यागी साधु बना कर बस्ती के बीच जंगल में मानो मंगल सर्जा ! फलस्वरुप सामान्य जनसमाज को साधुओं के उपदेश का लाभ मिला-उनके जीवन बदले और संतों की सेरेछाया में एक ठंडक मिली– निश्चिंतता मिली; तो दूसरी ओर धर्म के कड़े नियमों के अनुशासन से संतों की निर्मलता-पवित्रता भी बनी रही !

भयंकर कलियुग में-बस्ती में नियम-धर्म के अनुशासन द्वारा हिमालय की एकांत साधना को शक्य करने वाले भगवान स्वामिनारायण की सर्वोपरिता मान्य करनी ही रही !

स्त्री और धन के सच्चे त्यागी साधु सबसे पहले भगवान स्वामिनारायण ने ही दिए। मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी के समय का एक प्रसंग इस बात का सबूत है। जूनागढ़ का

दीवान उत्तर भारत की यात्रा पर जाते हुए दर्शन करने मंदिर आया... उसने पू. स्वामिजी के पांव छू कर भक्तिभावपूर्वक पूछा– स्वामी ! भ्रमणयात्रा पर जा रहा हूँ, आपके लिए क्या लेता आऊँ ? पू. स्वामिजी ने हंस कर कहा– हम तो साधु ठहरे ! हमें क्या चाहिए ? फिर भी भ्रमण के लिए निकले हो, तो– तीर्थस्थानों में कई साधु होंगे। हमारे लिए स्त्री और धन के त्यागी ऐसे दो अच्छे साधु लेते आना। दिवान विचक्षण एवं अक्लमंद था। सभी तीर्थस्थानों में वह ऐसे साधु ढूंढता रहा। पर, पू. स्वामिजी ने कहे थे ऐसे स्त्री और धन के त्यागी साधु उसे कहीं नज़र नहीं आए। दीवान जब जूनागढ़ वापिस लौटा और मंदिर आया तब इतना ही कह पाया–

'स्वामी ! स्त्री और धन के सच्चे त्यागी साधु तो सिर्फ आपके पास ही हैं।'

भगवान स्वामिनारायण द्वारा दिए नियम-धर्म की सर्वोपरिता का यह ज्वलंत उदाहरण है। यूं **भगवान स्वामिनारायण के नियम भी सर्वोपरि** ! अक्षरधाम जैसा कोई धाम नहीं, महाराज जैसा कोई भगवान नहीं और उनके नियमों जैसे कहीं नियम नहीं !

सत्संग में भी स्त्री-पुरुष मर्यादा रखवा कर भगवान स्वामिनारायण ने तत्कालीन समाज में एक नया आश्चर्य जरुर खड़ा कर दिया था। पर, अधिक आश्चर्य की बात यह है कि 220 वर्ष के पश्चात् आज भी वह प्रणालिका चालू है ! **भयंकर कलियुग में ऐसी शुद्ध प्रणालिका श्रीजी महाराज के साहसिक और दूरदर्शी होने का स्पष्ट परिचय करवाती है।** इससे **श्रीजी महाराज ने बहनों की उपेक्षा, तिरस्कार या अपमान नहीं किया। बल्कि उनका विकास रुक न जाए ऐसी एक अलग-सी व्यवस्था करी है-प्रणाली रखी है।** इस हेतु 'शिक्षापत्री' में हर एक के यानि– बहनों, गृहस्थों, साधुओं व आचार्य के नियम भी स्पष्ट किए। और... इससे जो ढांचा तैयार हुआ उसके मुताबिक इसी मर्यादा में अनुयायी सभी रहने लगे हैं, जहां एक की राह में दूसरा बाधारुप नहीं बनता। इतना ही नहीं, बल्कि सहायक बनता है।

इस तरह भारत की धर्मपरंपराओं को जीवंत रखने वाले सभी में 'स्वामिनारायण' अद्वितीय हैं। **इनके जैसी विशुद्धि किसी ने बनाई रखी नहीं है।**

'महाजनों येन गतः स पन्थाः'–इस सिद्धांत का भी इन्होंने आग्रह नहीं रखा, पर **जहां-जहां क्षतियाँ नज़र आईं–जहां-जहां जरुरत लगी वहां बदलाव लाए–परिवर्तन करवाए।** संप्रदाय का इतिहास गवाह है कि–**महाराज की एक ही आवाज़ पर वर्षों पुरानी रुढ़िगत वर्णाश्रम की मान्यताओं का त्याग करके, वैष्णवी दीक्षा को रुखसत करके एक ही रात में 500 महारथी सिद्धों ने गाँव 'कालवाणी' में परमहंस की दीक्षा ग्रहण करी** ! इतना ही नहीं, बल्कि महाराज द्वारा प्रवताई 108 कठिन कसौटियों से वे हंसते-हंसते गुज़रे। ये परमहंस कोई लल्लु-पंगु, गरीब, अज्ञानी, भोले, निर्बल या असमर्थ नहीं थे, बल्कि लौकिक व पारलौकिक सामर्थी पाई विभूतियाँ थीं। मुमुक्षुता, विद्वत्ता, बुद्धिमत्ता से समृद्ध व विविध कलाकौशल्य के साथ-साथ **कई तो विविध सिद्धियों के मालिक व ऐश्वर्यसंपन्न थे !** जगत के तो वे भगवान होकर पूजे जाते। परंतु ऐसे समर्थ परमहंसों को अपनी असाधारण सामर्थी और दिव्य प्रेम से वश करके अपनी उंगली के इशारे पर कठपुतली की तरह नचाने वाले श्रीजी महाराज की यह कैसी अनोखी ताकत होगी कि इन परमहंसों ने उनके चरणों में समर्पित होकर दास बनने में जीवन की सच्ची सार्थकता मानी ! **ऐसे सिद्धों के भी स्वामी श्रीजी महाराज को परमेश्वर ही कहा जाए न ?**

और... यह भी एक कौतुक ही कहा जाए कि– भगवान स्वामिनारायण ने अपनी हयाती में ही वड़ताल मंदिर में **स्वयं की मूर्ति की 'हरिकृष्ण महाराज' के नाम से प्राणप्रतिष्ठा करके सर्वोपरि उपासना की नींव रखी। स्वयं की मूर्ति का पूजन किया-करवाया और आरती उतारी व उतरवाई** और वह मूर्ति सब आश्रितों की उपास्य मूर्ति है ऐसा आदेश भी दिया।

जगत के धर्म के इतिहास में अभी तक ऐसा कभी नहीं बना। अपनी कीर्ति व महत्ता के लिए धन खर्च करके कोई अपने पुतले बनवा तो दें, पर उनमें-उस मूर्ति के प्रति श्रद्धा, भक्ति, पूज्यभाव कैसे रखवा पाएंगे ? जबकि यहां तो–पाँच-पचास नहीं, बल्कि लाखों की तादाद में मनुष्य 'स्वामिनारायण' का 'भगवान' के रुप में भजन करने लगे ! वे दर्शन भी कैसे विरल होंगे कि खुद की मूर्ति के सामने खड़े रह कर खुद आरती उतारे ! **जो समर्थ होगा वही ऐसा कर सकता है ना ?** देवों का ऐश्वर्य लेकर अवतरित होना एक बात है, लेकिन उस ऐश्वर्य की खुद घोषणा करके प्रतिष्ठा करनी वह अलग बात है। युगधर्म प्रवर्तक विभूतियाँ विविध स्वरुप लेकर कार्यकारण भाव से आती हैं और अपना कार्य संपन्न करके लौट जाती हैं। इनके आने से बड़ी-बड़ी क्रांति भी होती हैं, पर इससे इन्हें 'अवतार' नहीं कह पाएंगे। अवतार तो स्वयंप्रकाशित-स्वयंसिद्ध होते हैं।

पहले जो-जो अवतार पुरुष हुए, उनके शरीर छोड़ने के कई वर्षों बाद उनके मंदिर बने, उनकी मूर्तियाँ स्थापित हुई, जबकि श्रीजी महाराज ने अपनी हाज़िरी में ही ऐसे छः बड़े शिखरबद्ध मंदिरों की रचना करी।

शास्त्र बताते हैं कि पहले जो-जो अवतार हुए, उन्हें तत्कालीन समाज में साक्षात् भगवान मान कर जीने वाले-

उसका भजन करने वाले बहुत कम लोग थे। भगवान श्री राम को जंगल में भेजा... सिर्फ बंदरों ने पहचान कर सहयोग दिया। भगवान श्री कृष्ण को चरवाहा व कपटी-प्रपंची ठहराया... उसे भगवान मान कर भजन करने वाली गोपियाँ और उद्धवजी जैसे बहुत कम लोग थे। साथ में रहे यादव भी तो भगवान श्री कृष्ण को पहचान नहीं पाए ! जीसस को क्रोस पर चढ़ाया... जबकि **भगवान स्वामिनारायण का लाखों लोगों ने उनकी हयाती में ही 'भगवान' के रुप में स्वीकार करके उनका भजन किया !**

अब, 1967 में प.पू. काकाजी द्वारा इस बारे करी कथावार्ता पढ़ें—

'कोई भी तत्त्वज्ञान, सिद्धांत, रहस्य या आध्यात्मिक भूमिका को सर्वोपरि मानने के लिए मुख्यतया तीन सबूत जगत की महान विभूतियों ने मान्य करें हैं।

(क) परम सत्यस्वरुपों के रुप में पृथ्वी पर कल्याणकारी तत्त्वों की मौजूदगी स्पष्ट रुप से दर्शायी हुई होनी चाहिए। ऐसी सर्वोत्तम-श्रेष्ठ-सर्वोपरि उपासना ब्रह्म और परब्रह्म के प्रगटपन के रुप में मूर्त करके धाम, धामी और मुक्तों द्वारा प्रगट रह कर महाराज ने सिद्ध कर दिखाई। कारण और महाकारण के भाव टाल कर एकांतिक धर्म सिद्ध कराया। वैसे यह ज्ञान अवतार कोटि तक भी एक या दूसरे स्वरुप में अलग-अलग प्रकार से प्रगट हुआ दिखाई देता है, लेकिन आसरे में ही परम कल्याण—ऐसी परमसिद्धि-इतनी सुलभ और इतनी सरलता से मानव इतिहास में अब तक स्पष्ट रुप से उभर आई कहीं दिखाई नहीं पड़ती। श्रीजी महाराज ने 500 परमहंसों द्वारा और मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी तथा अनादि महामुक्त गोपाळानंदस्वामी जैसों के द्वारा परम कल्याण के तत्त्वों की स्पष्ट रुप से पहचान करा दी। भागवत् धर्म-एकांतिक धर्म-ब्रह्मरुप होने का ऐसा सरल मार्ग हमेशा के लिए खुला कर दिया।

(ख) सनातन तत्त्वों की यह सर्वोपरि युगल उपासना उनके शरीर छोड़ने तक ही ना रह कर, बाद में भी वैसा ही कल्याण-जीवन परिवर्तन और एकांतिक धर्म की सिद्धि-जीतेजी अक्षरधाम की प्राप्ति अखंडित रहे ऐसी महान बख़्शिश गुणातीत स्वरुप या उसके तद्‌वद्‌भाव को पाए **ब्रह्मस्वरुप एकांतिक सत्पुरुषों द्वारा कायम रखी** और गुरुपरंपरा के रुप में पू. भगतजी महाराज, पू. जागास्वामी तथा पू. कृष्णजी अदा और फिलहाल भी ब्र. स्व. गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के अंतर्धान होने के बाद प.पू.प्र.ब्र.स्व. स्वामिश्री योगीजी महाराज उन छः स्वरुपों को अखंड धार कर परात्पर पुरुषोत्तम नारायण का—अक्षरधाम का सुख सभी को दे रहे हैं। यहां कोई साधन या भेदभाव जरुरी नहीं गिना है। सिर्फ उनके प्रति सद्‌भाव रख कर, वे जो कहें वह करने लग पड़ने वाले को प्राप्ति सुगम है और निर्दोषबुद्धि वाले भक्तों को एकांतिक धर्म भी इतना ही सुगम है। केवल शुद्धभाव से उनका जँचता कर लेने की अभिप्सा के साथ लग पड़ने की तमन्ना रखनी रही।

(ग) सर्वोपरि प्रगटपन और कल्याण रीति वैसी की वैसी ही कायम रखने के अलावा श्रीजी महाराज ने गँवार, तमोगुणी और रजोगुणियों के लिए भी ऐसी ही ब्राह्मीस्थिति के लिए सर्वोपयोगिता-सरलता और सुगमता प्रतिपादित करी है। **स्वयं का ही श्रेय कर लेने की लगन से भले कैसा ही कामी, क्रोधी, लोभी, लम्फट जैसा जीव भी प्रगट स्वरुप के साथ शुद्धभाव से संबंध कर ले, तो वह भी वचनामृत सारंगपुर-9 और मध्य-7 के मुताबिक जीतेजी ही ब्रह्मस्वरुप हो जाएं।** वेद, उपनिषद्, गीता और भागवत् के परम रहस्य वेदकाल के दौरान या बाद में भी सिर्फ विद्वानों के लिए ही सीमित थे। स्वामिनारायण भगवान ने सभी मुमुक्षुओं के लिए बिना किसी भेदभाव के खुल्ले कर दिये और प्रगट स्वरुप के आसरे में रह कर उनके जँचते में वर्तने वाले हर एक के लिए जीतेजी ही परम कल्याण की प्रतीति करवा दी। **यूं लक्षावधि मुमुक्षुओं के लिए तत्त्वज्ञान के रहस्य समझ कर जीवन मुक्तदशा पानी सुगम बनाई।**

इस प्रकार

सर्वोत्तम युगल उपासना का तत्त्वज्ञान,
सनातन तत्त्वों का ऐसा ही अखंडित प्रगटपन
और
वासना का क्षय व प्रकृति का आमूल परिवर्तन करके जीतेजी ही भीतर का-सूक्ष्म का जगत टाल देने की राह हर एक के लिए आसान बना दी। यही भगवान स्वामिनारायण की सर्वोपरिता है।'

धन्य है भारत की धरती जिसकी गोद में खेलने अक्षरधाम से सर्व अवतारों के अवतारी पूर्ण पुरुषोत्तम 'भगवान श्री स्वामिनारायण' स्वयं आए ! हम सब के भाग्य का तो पार ही नहीं कि इसी धरती पर हमारा जन्म हुआ और भगवान स्वामिनारायण के अखंड धारक गुणातीत संतों का जोग भी मिल गया। जीवन की हर सैकण्ड इन्हें 'धन्यवाद-धन्यवाद' करने के सिवा और कुछ करने जैसा नहीं है। मानवस्वरुप में प्रभु को अखंड धार कर जीने वाले प्रगट संत के दर्शन-वही साक्षात् भगवान का दर्शन, उस संत की पूजा-वही साक्षात् भगवान की पूजा, उस संत की सेवा-वही साक्षात् भगवान की सेवा—यह प्रतीति कराने का संपूर्ण श्रेय श्रीजी महाराज को ही जाता है। प्रगट संत में जो तेज है, वह भगवान का ही तेज है।

उसके द्वारा भगवान ही बोलते हैं। उस संत से भगवान एक सैकण्ड भी अलग नहीं रहते। ब्रह्मस्वरुप संत में परब्रह्म का अखंड निवास है यह 'प्रगट' का रहस्य स्वामिनारायण भगवान ने दिया ! यह मूल रहस्य जहां एक ओर महाराज की सर्वोपरिता को सिद्ध करता है, तो दूसरी ओर उनके संबंध से मानव जीवन के अंतिम लक्ष्य को साकार भी करता है।

सच, मानवस्वरुप में प्रभु की हमें अनमोल प्राप्ति हुई है। गरीब रह कर हमें इस भव्य प्राप्ति को संभालना है ! गरीब यानि आर्थिक रुप से कंगाल हो—वैसे गरीब नहीं, बल्कि भीतर से रांक रह कर !

तो, आइए **'सर्वोपरि स्वामिनारायण'** की सत्ता का पल-पल स्वीकार करके **दशहरा, शरद्पूर्णिमा, दीवाली, प.पू. पप्पाजी का आराधना पर्व, स्वामिनारायण महामंत्र द्विशताब्दी व प.पू. काकाजी साक्षात्कार दिन स्वर्णजयंती** के मंगल पर्वों को मनाना सार्थक करें !

अन्नकूटोत्सव...

15 नवम्बर, गुरुवार की **सुबह 11:45** को 'ताड़देव' में
श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज एवं सभी गुणातीत स्वरुपों की मूर्तियों को
वार्षिक महाभोग लगा कर आरती होगी...
इस मंगलकारी अवसर पर सपरिवार ईष्ट मित्रमंडली सहित उपस्थित रहने का आपको हार्दिक निमंत्रण है।

– श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर, ताड़देव

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	26.10.01	शुक्रवार	–	दशहरा, प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का पार्षदी दीक्षा दिन
(2)	दि.	28.10.01	रविवार	–	एकादशी, व्रत
(3)	दि.	1.11.01	गुरुवार	–	शरद्पूर्णिमा, मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी का प्रागट्य दिन प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन
(4)	दि.	3.11.01	शनिवार	–	ब्र.स्व.प.पू. जागास्वामी जन्म जयंती
(5)	दि.	11.11.01	रविवार	–	एकादशी, व्रत
(6)	दि.	12.11.01	सोमवार	–	धनतेरस-लक्ष्मी पूजन
(7)	दि.	14.11.01	बुधवार	–	दीवाली, शारदा पूजन
(8)	दि.	15.11.01	गुरुवार	–	अन्नकूटोत्सव, नूतन वर्ष प्रारंभ
(9)	दि.	16.11.01	शुक्रवार	–	भैयादूज
(10)	दि.	20.11.01	मंगलवार	–	लाभपंचमी
(11)	दि.	26.11.01	सोमवार	–	प्रबोधिनी एकादशी,व्रत

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Monthly Magazine
Despatched on 25/26 of every month
If undelivered please return to :—
Printer, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'Taddev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Type Setting : **SHAYOKA Type Setting**
Rama Vihar, Delhi-110081 Phone: 5483035
Printed at : **Delux Offset Printers**
308/4, Shahzadabad, Opp. Rohtak Road,
Daya Basti, Delhi

To